गुरुपूर्णिमा महोत्सव

✻ ब्रह्माकुमारी नलिनी, मुंबई (घाटकोपर)

गुरुपूर्णिमा का दिवस भक्तगण बहुत श्रद्धा से मनाते हैं। इस दिन हर एक अपने गुरुस्थान पर उनका आशीर्वाद लेने जाते हैं। गुरुओं के पद पर प्रस्थापित महान आत्माएँ सत्गुरु की स्मृति दिलाने वाली होती हैं। सत्गुरु ही उनके द्वारा अपने भक्तों की मनोकामनायें पूरी करते हैं। सत्गुरु अर्थात् परमपिता परमात्मा, वे गुरुओं को निमित्त बनाकर सबकी मदद करते हैं।

कहते हैं, 'गुरु बिना ज्ञान नहीं', 'गुरु बिना घोर अंधियारा', 'गुरु बिना सद्गति नहीं' इसलिए गुरु को बहुत महान माना जाता है। सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा तथा उनके साथी विष्णु और शंकर को भी गुरु रूप में याद किया जाता है। कहा गया है, 'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर, गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः' इस तरह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के साथ-साथ परब्रह्म में रहने वाले परमपिता परमेश्वर को भी सत्गुरु के रूप में विशेष याद करके उन्हें नमन किया जाता है। जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शंकर देवताय नमः, वैसे ही शिव परमात्माय नमः। ऊँचे से ऊँचे लोक के रहने वाले, सर्व आत्माओं के परमपिता, गुरुओं के भी सत्गुरु, गुरुणाम् गुरु एक ही थे, एक ही हैं और एक ही रहेंगे, ऐसे सत्गुरु को भी इस दिन विशेष रूप से याद किया जाता है। मनुष्य आत्माओं की सभी चाहनाएँ गुरुओं के भी सत्गुरु परमपिता परमात्मा पूरी करते हैं।

हमें उनका पूर्ण परिचय न होने के कारण हम अन्य गुरुओं के पास जाते हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि हम सच्चे सत्गुरु परमपिता परमात्मा को जानें, जो एक ही हैं। श्रीराम, श्रीकृष्ण और शंकर आदि देवताओं ने भी शिव का ध्यान किया है। वे इस सृष्टि के निवासी नहीं हैं, सृष्टि के पांच तत्वों से भी पार ब्रह्मतत्व, परलोक, परमधाम है, वहाँ के रहने वाले हैं। हम सब के लिये सत्गुरु के साथ-साथ माता, पिता, सखा, बंधु आदि सर्व सम्बन्धी हैं। वे गुरु या सत्गुरु के रूप में हमें जीवन में मदद करते आये हैं, शिक्षा देते आये हैं और दुख-दर्दों से मुक्त करते आये हैं।

जब किसी भी व्यक्ति की पूर्णता को, विशेषता को पूर्ण रूप से दिखाना होता है, तो कहा जाता है, वह चंद्रमा की तरह 16 कला पूर्ण है। गुरु भी सर्व गुणों के सागर, सर्वज्ञ, सर्व शक्तियों से पूर्ण, सर्व दुखों, विकारों से मुक्त करने वाले, सभी आत्माओं को सुख देने वाले होने चाहिएँ। ऐसे सत्गुरु तो एक ही परमपिता परमात्मा हैं जिनके स्मरण से ही सारे गुरुओं को गुरु पद मिलता है। जो भी गुरु हैं वे परमात्मा की मदद के बिना किसी का दुख दूर नहीं कर सकते, इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते क्योंकि वे खुद जीवन-मृत्यु और जन्म-पुनर्जन्म के बंधन में बंधे हुए हैं। याद रहे, केवल एक ही निराकार सत्गुरु परमपिता हैं जो सर्व बंधनों से मुक्त हैं, कालों के काल सद्गति दाता हैं। इसलिए गुरुपूर्णिमा उन्हीं सत्गुरु की याद में मनानी है। भले ही हम इन गुरुओं पर श्रद्धा रखें, आदर करें परन्तु याद रखें कि इन गुरुओं की महानता भी केवल सत्गुरु के कारण ही है। इसलिए हमें सत्गुरु को ही जानने का यत्न करना है। गुरु तो दलाल होते हैं। उनसे बुद्धि की सगाई करने के बजाए सत्गुरु की याद में गुरुपूर्णिमा मनाएँ। उस सत्गुरु परमपिता परमात्मा को हम अपने विकारों की भेंट दें ताकि फिर कभी उन विकारों के वश ना हों और सदा सफलता को प्राप्त करें। ❖